श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति
गुरुवरों के विचारों/कार्यों को समर्पित

# यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

संस्थापक- प. पू. तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा.
प्रेरक- माण्डवपुर तीर्थप्रेरक, प्रवचनकार प. पू. आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

सम्पादक- पंकज बी. वालड़ स. सम्पादक- कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'

* वर्ष : 24 * अंक : 11 * नोटेरा, अहमदाबाद * दिनांक 1 सितम्बर 2018 * पृष्ठ : 4 * मूल्य 5/- रुपये

# माण्डवपुर की धन्य धरा का अतीत और वर्तमान इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित होगा

उदयपुर, (स. सं),

तप, त्याग, भक्ति और शौर्य में राजस्थान की धर्मधरा का स्थान विश्व के मानचित्र में स्वर्णिम अक्षरों से मण्डित है । जिनकी गाथाएँ गाते-गाते सदियाँ बीत जाये तो भी उन्हें गा नहीं सकते है । भक्ति के अनेक रूपों में राजस्थान का विशिष्ट स्थान है, तीर्थों के रूप में सम्पूर्ण विश्व में यहाँ के तीर्थ स्थलों का नाम कलात्मक शिल्प एवं स्थापत्य कला के लिए अग्रिम पंक्ति में उल्लेखित किया गया है । ऐसे ही तीर्थों की शृंखला में जिस तीर्थ का नाम अंकित होने जा रहा है, उस तीर्थ का नाम है श्री माण्डवपुर तीर्थ ।

अतीत में इस तीर्थ को उद्धरित करने का श्रेय दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. को जाता है । जिन्होंने अपनी दीर्घदृष्टि एवं मेधावी प्रज्ञा से जान लिया था कि यह तीर्थ भविष्य में जैन संघ एवं त्रिस्तुतिक गुरु परम्परा का जैन श्रीसंघ का महातीर्थ स्वरूप लेगा । उनके पश्चात् उनके पट्टधरों जिसमें चर्चा चक्रवर्ती श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरिजी म. सा., उपाध्यायप्रवर श्री मोहनविजयजी म. सा., शान्तमूर्त्ति श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरिजी म. सा. आदि ने तीर्थ जीर्णोद्धार का लक्ष्य बराबर बनाए रखकर क्रमिक विकास भी करवाया । उनके पश्चात् सम्वत् 1978 में व्याख्यान-वाचस्पति, माण्डवपुर तीर्थोद्धारक श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की पावन पवित्र शुभनिश्रा में एवं आपश्री के सुशिष्य मुनिराजश्री विद्याविजयजी म. सा. (श्री विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ) के कुशल निर्देशन में महामहोत्सवपूर्वक वि. सं. 2009 में महावीरजी मूल मन्दिर सहित पंचतीर्थी जिनालय की प्रतिष्ठा हुई एवं धर्मशाला निर्माण सहित तीर्थ विकास कार्य चलता रहा ।

सम्वत् 2033 में प. पू. दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की जन्म एवं स्वर्गारोहण तिथि पौष शुक्ला गुरु सप्तमी कवि हृदय आचार्यदेव श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की मंगलकारी शुभनिश्रा में प्रथम बार मनाई गई । तब से माण्डवपुर में प्रतिवर्ष भव्यातिभव्य आयोजन पूर्वक गुरु सप्तमी मनाई जा रही है । इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री ने माण्डवपुर तीर्थ में भव्यातिभव्य श्री राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी बनाने की मंगल प्रेरणा प्रदान की थी ।

## योगिराज के चरण स्पर्श से श्री माण्डवपुर तीर्थ हुआ निहाल

वि. सं. 2036 में कवि हृदय आचार्यदेव श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की शुभाशा से महातपस्वी, योगीराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. एवं बालमुनिश्री जयरत्नविजयजी म. सा. (वर्तमान में श्री जयरत्नसूरीश्वरजी) यहाँ पधारे । तीर्थभूमि मानो प्रतीक्षारत थी महान सन्तों के चरण स्पर्शन को । श्री विद्या बावजी के आदेश से सम्वत् 2037 का चातुर्मास योगिराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. एवं आपश्री के शिष्यरत्न बालमुनिश्री जयरत्नविजयजी म. सा. (वर्तमान में श्री जयरत्नसूरीश्वरजी) आदि ठाणा-2 का श्री माण्डवपुर तीर्थ में श्री दियावट पट्टी चौवीसी संघ की ओर से हुआ । श्री विद्याचन्द्रसूरिजी म. सा. के देवलोकगमन पर ऐतिहासिक भव्य अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन हुआ । चातुर्मास में तप-जप एवं आराधना के अनेक भव्य कार्यक्रम योगीराज की निश्रा में आयोजित हुए । इस ऐतिहासिक चातुर्मास में सामाजिक चेतना बढ़ाने एवं तीर्थ की सुघड़ व्यवस्था को दूर करने हेतु बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. ने अथक प्रयत्न कर श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) का गठन कर चातुर्मास के उपलक्ष्य में नूतन धर्मशाला का शुभारम्भ किया तथा नूतन पेढ़ी का निर्माण कराया । पश्चात् श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर, श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला, श्री यतीन्द्र भवन उपाश्रय, पानी की टंकी, स्टोर रूम, श्री वर्धमान-राजेन्द्र चिकित्सालय, श्री महावीर अहिंसा स्मारक चौराहा, चबूतरा, दो मंजिली धर्मशाला, ट्रस्ट मण्डल हॉल आदि अनेक भवन निर्माण कार्य तीर्थ यात्रियों की सुविधार्थ किए गए ।

मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. के अथक प्रयास से राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं योगिराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. की निश्रा में अ. भा. त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का सम्मेलन जिसमें अभिधान राजेन्द्र कोष के पुनः प्रकाशन का निर्णय भी हुआ तथा सम्पूर्ण जालोर जिला जैन समाज का सम्मेलन भी इस तीर्थ भूमि पर हुआ ।

## आचार्य पदोत्सव एवं पुण्योत्सव से प्रकटा पुण्य प्रभाव

वि. सं. 2040 में सम्पूर्ण भारत से पधारे श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघों की विशाल उपस्थिति में प. पू. योगिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. की शुभ निश्रा में कविरत्नश्री विद्याचन्द्रसूरिजी म. सा. के पट्टधर के रूप में साहित्य-मनीषी मुनिराजश्री जयन्तविजयजी म. सा. को आचार्य पदवी से अलंकृत करते हुए श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. नाम उद्घोषित किया । इसी आयोजन में आचार्यश्री द्वारा वरिष्ठ मुनिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. को संयमवयः स्थविर उपाधि से अलंकृत किया ।

साहित्य-मनीषी आचार्यदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं कृपासिन्धु , योगिराज, श्री शान्तिविजयजी म. सा. की पावन निश्रा एवं मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. के निर्देशन में सं. 2045 में दो सौ जिन बिम्बों की अंजनशलाका एवं कमलाकार भव्य शिल्पकलायुक्त श्री राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी गुरु मन्दिर की प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ ।

वि. सं. 2053 में संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा. का देवलोकगमन हुआ । हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरिजी म. सा. की पावन निश्रा में अन्तिम संस्कार हुआ तथा राष्ट्रसन्तश्री शुभ निश्रा एवं तीर्थप्रेरक मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. के कुशल मार्गदर्शन में वि. सं. 2059 में श्री महावीरस्वामी भगवान के मन्दिर की 50 वीं ध्वजा व श्री शान्तिविजयजी समाधि मन्दिर की प्रतिष्ठा के साथ श्री मुनिसुव्रतस्वामी आदि 108 जिन बिम्बों की अंजनशलाका महामहोत्सव पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

आगम मन्दिर का निमार्ण, श्री महावीरस्वामी जिन मन्दिर का जीर्णोद्धार मूल मन्दिर को यथावत् रखते हुए इसकी ऐतिहासिकता बढ़ाने के लिए सुन्दरतम शिल्पकला युक्त रूप देने राष्ट्रसन्तश्री एवं योगिराजश्री की शुभनिश्रा एवं प्रेरणा से सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया । शुभघड़ी में तीर्थ प्रेरक मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. की शुभनिश्रा एवं मार्गदर्शन में वि. सं. 2063 को तीर्थ जीर्णोद्धार का मुहूर्त्त किया । दो वर्ष की अल्पावधि में 45 गम्भारा युक्त आगम मन्दिर का निर्माण कार्य एवं 45 आगम ताम्रपत्रों पर स्वर्णपरत चढ़ाने का कार्य हुआ । श्री महावीर जिनालय का निर्माण कार्य द्रुतगति से प्रारम्भ हुआ ।

सन् 2017 में राष्ट्रसन्त आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी म. सा. का शाश्वती नवपद ओली आराधना पर पदार्पण इस भूमि पर हुआ और तीर्थप्रेरक मुनिराजश्री की प्रशंसा करते हुए कहा कि मैं माण्डवपुर के विकास से पूर्णरूपेण संतुष्ट हूँ । मुझे यहाँ रहकर साधना आराधना करनी है क्योंकि यह तीर्थभूमि मेरे गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभाव से विकसित हुई है । विधि के विधान को कौन जानता था कि समय को क्या मन्जूर है । स्वास्थ्य प्रतिकूल होते हुए भी आपश्री माण्डवपुर तीर्थ में ओलीजी आराधना में अपनी निश्रा प्रदान करने पधारे । अचानक स्वास्थ्य अधिक बिगड़ा और उन्हें चिकित्सा लाभ हेतु अहमदाबाद ले जाया गया परन्तु साधक-आराधक एवं भवितव्य जीवों को सब कुछ पूर्व में ज्ञात हो जाता है और चिकित्सा लाभ लेते हुए भी उन्होंने अन्तिम समय तक श्रीसंघ एवं मुनिराजश्री से कहते रहे कि मुझे माण्डवपुर जाना है । एक दिन पूर्व श्रीसंघ के वरिष्ठ अग्रणियों के सम्मुख दो पट्टधरों की घोषणा करने की भावना व्यक्त की तथा दिनांक 17-4-2017 को माण्डवपुर तीर्थ पहुँचने हेतु श्रीसंघों को दूरभाष से सूचित किया । दिनांक 16-4 2017 को माण्डवपुर पधारे और सायंकाल पुनः अस्वस्थता बढ़ने पर चिकित्सकों की देखरेख में रात्रि में देवलोकगमन हो गया । आपके देवलोकगमन के पश्चात् हजारों गुरुभक्तों की विशाल उपस्थिति में श्री माण्डवपुर तीर्थ में आपका अन्तिम संस्कार किया गया । अन्तिम संस्कार के अकल्पनीय चढ़ावे हुए । श्रीसंघ ने आपको पुण्य-सम्राट के अलंकरण से अलंकृत किया ।

(शेष पृष्ठ दो पर)

# नवकार आराधना में करोड़ों जाप तपाराधना के साथ आराधना सम्पन्न

उदयपुर, (स. सं),

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा प्ररूपित एवं पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में तथा उनके आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा में 56 वर्षों से अनवरत चल रही नव दिवसीय श्री नवकार आराधना की पूर्णाहूति 26 अगस्त 2018 को देश के लगभग 100 से अधिक श्रीसंघों एवं विदेश में जापान में सानन्द सम्पन्न हुई।

प्राप्त समाचारों से ज्ञात हुआ है कि सभी स्थानों पर गुरुभगवन्तों के सान्निध्य में नौ दिनों तक करोड़ों नवकार के जाप से सारे नगर नवकारमय हो गए। नवकार महिमा की वैतरणी में हजारों आराधकों ने भावपूर्वक आराधना करते हुए गुरुभगवन्तों की नवकारमय वाणी का अमृतपान किया।

### उज्जैन-

त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ, उज्जैन के तत्वावधान में चल रहे स्वर्णिम चातुर्मास में प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा में श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना के अन्तर्गत नौ दिनों तक नवपदों की महिमा का वर्णन एवं एक-एक पद की भावयात्रा सम्पन्न हुई जिसमें प्रतिदिन विभिन्न तीर्थों की भावयात्रा करवाई गई। 808 आराधकों के अतिरिक्त नगर एवं बाहर से पधारने वाले श्रावक-श्राविकाओं ने भी इसका लाभ उठाया।

गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में समाज में चल रहीं तपस्याओं की शृंखला में अनेक तपस्वी जुड़ रहे हैं। विभिन्न तपस्याओं में लगभग 40 मासक्षमण, सिद्धितप एवं 8, 11, 16 की तपस्याएँ गुरुभक्त कर रहे हैं। सभी तपस्वी सुखसाता में है। उज्जैन गच्छाधिपतिश्री की पावन निश्रा में तपमय, जपमय एवं धर्ममय हो गई है। श्रीसंघ में उत्साह एवं हर्षोल्लास का वातावरण बना हुआ है। सभी वर्ग में तपस्या की झड़ी लगी हुई है। तपके क्रम में 16 वर्षीय अवि प्रदीप नाहटा ने 11 की तपस्या की।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री की निश्रा बकरीद पर 1000 आयम्बिल की तपस्या की गई तथा जीवदया हेतु विपुल राशि एकत्रित की गई जिससे बकरीद के दिन अबोल पशुओं को खरीद कर बचाया गया। पुण्य-सम्राटश्री का स्मरण करते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेवश्री ने नवकार के अलौकिक प्रभाव से श्रीसंघ के कई कार्यों को सुगम बनाते हुए आई हुई आपत्तियों को नष्ट किया था। पुण्य-सम्राट का ही आशीर्वाद है कि आज भी उनके द्वारा प्ररूपित इस साधना-आराधना के द्वारा आप सब महामन्त्र के प्रभाव का अनुभव कर रहे हैं। गच्छाधिपतिश्री ने सभी तपस्वियों की सुखसाता पूछते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म. सा., मुनिराजश्री विद्वद्रत्नविजयजी म. सा. ने तप की महिमा बताते हुए सारगर्भित प्रवचन प्रदान किया। विशिष्ट अतिथियों का स्वागत-अभिनन्दन श्रीसंघ ने किया। अन्तिम दिन गुरु पूर्णिमा पर यतीन्द्र वाणी के स. सम्पादक एवं कवि कुलदीप 'प्रियदर्शी' व अनेक गुरुभक्तों ने गच्छाधिपतिश्री का गुरु पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर गच्छाधिपतिश्री से प्रियदर्शी ने मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए चर्चा की।

नमस्कार आराधना के सम्पूर्ण लाभार्थी श्री मोतीलालजी श्रेणिकलालजी राजेशकुमारजी वनवट परिवार ने सभी आराधकों एवं पधारे मेहमानों की स्वामीभक्ति कर पुण्य अर्जित किया। दिनांक 27-8-2018 को सामूहिक पारणोत्सव आयोजित किया गया। नवकार आराधकों के संग तपस्वियों का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। गच्छाधिपतिश्री के दर्शनार्थ अनेक नगरों से श्रीसंघों, जन प्रतिनिधियों एवं गुरुभक्तों का आगमन निरन्तर जारी है।

### भारतनगर-मुम्बई-

आध्यात्मिक शंखनाद के अन्तर्गत क्रान्तिकारी युवा प्रवचनकार मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में चल रहे चातुर्मास के अन्तर्गत नव दिवसीय श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना का आयोजन श्री भारत नगर जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, भारत नगर-मुम्बई के तत्वावधान में किया गया। प्रतिदिन मुनिश्री ने भावपूर्वक सभी आराधकों को प्रतिदिन अलग-अलग तीर्थों की 68 तीर्थ भावयात्रा के अन्तर्गत भावयात्रा करवाई। प्रतिदिन भावयात्रा में संघपति एवं एकासन पारणे का लाभ अलग-अलग लाभार्थियों द्वारा लिया गया।

मुनिराजश्री ने अपनी ओजस्वी प्रवचन शैली से आध्यात्मिक एवं धर्मजागरण से सभी को प्रभावित कर समाज को नई दिशा प्रदान की है। मुनिश्री के प्रवचन-दर्शन-वन्दन को नित्य गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

### चैन्नई-

साहूकार पेठ स्थित श्री राजेन्द्र भवन में मुनिराजश्री संयमरत्नविजयजी म. सा. के सान्निध्य में नव दिवसीय नमस्कार महामन्त्र आराधना सानन्द सम्पन्न हुई। मुनिश्री ने प्रतिदिन आराधकों को तीर्थों की भावयात्रा करवाते हुए नवकार महिमा को दर्शाते हुए कहा कि नवकार में दो बार 'च' आता है जो देशविरति चारित्र और सर्वविरति चारित्र धारण करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

देशविरति चारित्र यानि अल्प मात्रा में छोटे-छोटे व्रतों को धारण करना। यदि हम सर्वविरति चारित्र यानि सम्पूर्ण रूप से व्रती न बन सकें तो देशविरति चारित्र धारण करना चाहिये। चारित्रवान् आत्मा ही नवकार में स्थान बना सकती है। चारित्र का इत्र सबको पवित्र बना देता है। नवकार भाव प्रभाव व स्वभाव से परिपूर्ण है। नमस्कार महामन्त्र अपने आपमें मन्त्र-तन्त्र और यन्त्र की विशेष शक्ति का पुंज है।

सम्पूर्ण महामन्त्र नवकार में मात्र गुणों का ही निवास है। जहाँ गुण और गुणीजन होते हैं वहीं पूजा होती है। जो साधक सतत नवकार की साधना में लीन रहता है उसे ही आत्मस्वभाव की प्राप्ति होती है।

मुनिश्री के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण हेतु चैन्नई के उपनगरों एवं अन्य नगरों के गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

# सूरत में तपस्याओं का कीर्तिमान

साध्वीश्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म. सा. एवं साध्वीश्री मयूरकलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-34 की पावन निश्रा में चातुर्मासोत्सव में सूरत में तपस्याओं का कीर्तिमान सृजित हुआ है। साध्वीश्री की मधुर वाणी से प्रेरित होकर धर्मनगरी सूरत ने नगर में तपस्याओं की होड़ाहोड़ मचा दी है। ऐसी धर्मप्रभावना सूरत श्रीसंघ में प्रथम बार हुई।

श्री सौधर्मबृत्तापागच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ सूरत (थराद वालों) के तत्वावधान में अडाजण-सूरत की धर्मस्थली पर होने वाले चातुर्मासोत्सव में 355 सन्तिकरं तप, 230 सिद्धितप के साथ ही बाल साध्वीश्री जयनिधिश्रीजी म. सा. जोकि तत्त्वज्ञान, जीव विचार आदि के स्वाध्याय में हमेशा अग्रणी रहीं और तप-त्याग-तपश्चर्या में भी अग्रणी रहते हुए मासक्षमण की उग्र तपस्या कर रही है। धन्य है सूरतवासी जिनको ऐसी तपश्चर्याओं को कराने का सौभाग्य साध्वीश्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म. सा. की निश्रा में प्राप्त हो रहा है। 8, 11, 16 आदि की अनेक तपस्याएँ भी चल रही है।

साध्वीश्री की निश्रा में श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना भी सानन्द सम्पन्न हुई जिसमें 155 आराधकों ने आराधना की। आराधना में प्रत्येक दिन लाभार्थी परिवार की ओर से भावयात्रा करवाई गई तथा एकासन का लाभ लिया गया। सभी तपस्वियों को सामूहिक पारणा करवाया गया।

साध्वीश्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण हेतु विभिन्न ग्राम-नगरों के श्रीसंघ एवं गुरुभक्तों का आगमन निरन्तर हो रहा है। पूरे नगर में चातुर्मास की प्रशंशनीय चर्चा है।

# माण्डवपुर की धन्य धरा.... (शेष पृष्ठ एक का)

इस पुण्य भूमि पर ऐसा अद्भुत संयोग बना कि आपने इस पुण्य धरा पर आचार्य पदवी पाई और इस जगत से यहीं से ली अन्तिम विदाई। कैसा विचित्र संयोग बना कि पुण्य-सम्राट एवं गुरुभ्राता कृपासिन्धु गुरुदेव दोनों जैसे तय कर चुके हो कि हम जीवन भर साथ-साथ रहे हैं तो अन्तिम समय में भी एक ही स्थान पर साथ-साथ रहे।

यह तीर्थ भूमि पुण्य-सम्राट की पुण्याई एवं कृपासिन्धु की कृपा से बड़े तीर्थों की श्रेणी में अपना स्थान बनाने जा रही है इसके पीछे अथक परिश्रम, प्रयास किसका है तथा पुण्य-सम्राट गुरुदेव का पुण्य इस माटी में कैसे प्रकटा ? यह सब अगले अंक में.....

**-कुलदीप 'प्रियदर्शी' स. सम्पादक, यतीन्द्र वाणी**

# श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना

उदयपुर (स.सं.)

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती श्रमणिवृन्द के चातुर्मासोत्सव में श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना साधना-आराधना के साथ विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुई।

**भाटपचलाना-**

साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अड़सठ अक्षर श्री नवकार महामन्त्र आराधना का आयोजन किया गया। प्रतिदिन लाभार्थी परिवार द्वारा भावयात्रा का लाभ लिया गया। प्रतिदिन साध्वीश्रीजी द्वारा नवकार मन्त्र महिमा की भावपूर्ण व्याख्या की गई।

साध्वीश्री के दर्शनार्थ-वन्दनार्थ परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू एवं पदाधिकारी पधारे। नित्य श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

**मेघनगर-**

साध्वीश्री अनेकान्तलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना का आयोजन किया गया। आराधकों को नवकार की महिमा बताते हुए साध्वीश्री ने कहा कि नवकार हमें जन्म के साथ ही प्राप्त हुआ है। सरलता से प्राप्त हुआ है और जो हमें सरलता से प्राप्त हो जाता है, हम उसकी कीमत नहीं समझते हैं। किन्तु जिन्हें यह परिश्रम से प्राप्त होता है, वह इसे प्राप्त कर अपने आपको धन्य समझते हैं। क्योंकि नवकार के भीतर नवनिधि, अष्टसिद्धि, लब्धि का भण्डार है। जिसने श्रद्धा के साथ नवकार का ध्यान किया उसका निश्चित ही कल्याण हुआ है। नौ दिनों में प्रतिदिन तीर्थों की सुन्दरतम भावयात्रा करवाई गई।

साध्वीश्री की निश्रा में मेघनगर में विविध तपस्याएँ जिसमें 14 सिद्धितप, 87 आयम्बिल, 3 एकासन एवं छोटी-बड़ी तपस्याएँ चल रही है। दर्शन-वन्दन करने हेतु श्रीसंघ, परिषद् पदाधिकारी आदि गुरुभक्त पधार रहे हैं।

**अलिराजपुर-**

साध्वीश्री शासनलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-5 की निश्रा में श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना सम्पन्न हुई। आराधना के मध्य नगर में चल रही 16 एवं 8 की तपस्या वाले तपस्वियों का बहुमान अलिराजपुर श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति द्वारा किया गया।

गुरुभक्त अलिराजपुर में विराजित साध्वीश्री के साथ ही समीप लक्ष्मणी तीर्थ स्थल के दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

# पुण्य-सम्राट की भावना साकार जापान में गूँजा नवकार

उदयपुर (स.सं.)

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में सन् 1963 को प्रारम्भ हुई श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना उनकी निश्रा में प्रतिवर्ष श्रावण मास में नौ दिवसीय निर्विघ्न अनवरत चलती रही, जिसमें अनेक राज्यों के हजारों गुरुभक्तों ने उपस्थित रह कर आराधना कर रहे थे। गुरुदेवश्री के देवलोकगमन के पश्चात् भी उनके पट्टधर गच्छाधिपतिश्री नित्यसेन-सूरीश्वरजी म. सा. व आचार्यदेवश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के आदेशानुसार अनेक श्रीसंघों में यह आराधना वर्तमान में भी चल रही है।

गुरुदेवश्री की निश्रा में अनेक गुरुभक्त जापान से भी आते थे तब गुरुदेव ने प्रेरणा की थी कि भारत के विभिन्न नगरों में आराधना हो रही है, इस आराधना को आप सभी गुरुभक्त जापान में भी प्रारम्भ करो। पू. गुरुदेव की इस भावना को वर्ष जापान के गुरुभक्तों ने साकार करते हुए श्री नमस्कार महामन्त्र की आराधना प्रारम्भ की, जिसमें जापान में इस वर्ष 150 से अधिक गुरुभक्तों ने बहिन तुलसीजी के सान्निध्य में नव दिवसीय आराधना में एकासन एवं उपवास की तपस्या के साथ पूर्ण की।

यतीन्द्र वाणी परिवार सभी आराधकों की भावपूर्वक अनुमोदना करता है।

**रतलाम-**

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के सान्निध्य में रतलाम में नीमवाला उपाश्रय में 41 नवकार मन्त्र आराधकों की नव दिवसीय श्री नमस्कार महामन्त्र आराधना सानन्द सम्पन्न हुई। आराधना में श्री निकुंजभाई अहमदाबाद व श्री हितेशभाई पारख, मेहसाणा ने नवकार मन्त्र पर विविध मुद्रा में जाप करने एवं नवकार महिमा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

# थराद में पुणिया श्रावक की सामायिक

उदयपुर (स.सं.)

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा में पुणिया श्रावक की सामायिक का भव्यातिभव्य कार्यक्रम हुआ। इस अनुष्ठान में सकल श्रीसंघ के भाइयों तथा बहिनों ने इसमें बहुत उल्लास से भाग लिया।

पूज्या साध्वीश्री के उपदेश से सभी भाई-बहिनों ने सामूहिक सामायिक की, साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में सामायिक का सुन्दर शैली में वर्णन करते हुए महत्त्व बताया।

# इन्दौर में गुरु मन्दिर का भूमिपूजन

उदयपुर (स.सं.)

प. पू. पुण्य-सम्राट राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयरत्न-सूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-7 की पावन निश्रा में श्री राजेन्द्र-जयन्त जैन धार्मिक पारमार्थिक ट्रस्ट, गुमास्ता नगर, इन्दौर में मध्यप्रदेश के में प्रथम बनने वाले जयन्तसेन गुरुमन्दिर का भूमिपूजन दिनांक 23-8-2018 को शुभ मुहूर्त में विधिविधान के साथ हुआ। भूमिपूजन का लाभ परम गुरुभक्त श्री शान्तिलालजी धर्मचन्दजी बोहरा परिवार तथा शिलापूजन का लाभ गुरुभक्त श्री मनसुखलालजी बसन्तीलालजी पोरवाल परिवार द्वारा लिया गया।

साध्वीश्री ने लाभार्थी परिवारों की गुरुभक्ति की अनुमोदना करते हुए उपस्थित गुरुभक्तों को मांगलिक श्रवण कराया।

# दो दिवसीय परिषद् का संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन उज्जैन में

उदयपुर (स.सं.)

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 29 सितम्बर एवं 30 सितम्बर 2018 को परम पूज्य पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में मध्यप्रदेश की धर्मनगरी उज्जैन नगर में आयोजित होगा।

नवयुवक, महिला, बहू, बालिका एवं तरुण परिषद् के संयुक्त सम्मेलन का उद्घाटन सत्र दिनांक 29 सितम्बर 2018 को प्रातः 8.30 बजे प्रभात फेरी से होगा।

प्रतिवर्ष होने वाले सम्मेलन में देश एवं विदेश की परिषद् शाखाओं के प्रतिनिधि अपनी शाखाओं के द्वारा किए गए सामाजिक, धार्मिक एवं जनकल्याणकारी प्रकल्पों का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं और सर्वश्रेष्ठ कार्यों के लिए परिषद् स्तर पर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। दो दिवसीय सम्मेलन में परिषद् की नवीन कार्य योजना पर चर्चा की जाती है।

गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में होने वाले इस सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों परिषद् सदस्यों के आने की सम्भावना है। उज्जैन श्रीसंघ एवं परिषद् कार्यकर्ता गच्छाधिपतिश्री के निर्देशानुसार इसकी तैयारी में जुटे हुए हैं। राजस्थान, म. प्र., कर्नाटक, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश आदि प्रान्तों के साथ ही विदेश की शाखाओं के प्रतिनिधियों का आगमन इस परिषद् सम्मेलन में होगा।

# बकरीद पर आयम्बिल की तपस्या

उदयपुर (स.सं.)

सवि जीव करूँ, शासन रसि। जिओ और जीने दो।

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के आदेशानुसार अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय द्वारा बकरीद पर सामूहिक आयम्बिल तप का आव्हान किया गया।

मूक, बधिर पशुओं की आत्मिक शान्ति हेतु अधिकाधिक संख्या में आयम्बिल करने और प्रेरित करने के साथ ही आयम्बिलशालाओं में अपनी सेवाएँ प्रदान करने का आव्हान किया। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश में अनेक नगरों में गुरुभक्तों ने हजारों की संख्या में आयम्बिल तप किया। प्राप्त विज्ञप्तियों के अनुसार कहाँ कितने आयम्बिल हुए वह निम्नानुसार है। कई स्थानों पर जीवदया हेतु विपुल राशि एकत्रित कर मूक पशुओं को खरीद कर उन्हें बचाया गया।

उज्जैन में 1008, माण्डवपुर में 50, मेघनगर में 50 उपवास व 75 आयम्बिल, अलिराजपुर में 50 आयम्बिल, नामली में 79 आयम्बिल, 5 उपवास, 1 सिद्धितप, 16 अशोकचक्र, चौमहला में 200 आयम्बिल, मदुराई में 400 आयम्बिल, बाग में 50 आयम्बिल, राजगढ़ में 205 आयम्बिल, सूरत में 155 आयम्बिल, भाटपचलाना में 65 आयम्बिल, नेल्लूर में 533 आयम्बिल, मैसूर में 700 आयम्बिल, बड़नगर में 250 आयम्बिल, महिदपुर में 87 आयम्बिल, विजयवाड़ा में 130 आयम्बिल, सारंगी में सामूहिक उपवास, एकासन, आयम्बिल, जोबट में 25 आयम्बिल, नीमच में 36 आयम्बिल, मदुरै में 310, नागदा जं. में 198 आयम्बिल, पारा में 61 आयम्बिल आदि अनेक नगरों में आयम्बिल की तपस्या कर मूक पशुओं की बलि की आत्मशान्ति हेतु की गई।

यतीन्द्र वाणी परिवार सभी तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए यही कामना करता है कि जब भी ऐसा अवसर आए तब तप की आध्यात्मिक शक्ति से हम सभी मूक पशुओं की आत्मिक शान्ति की कामना करें।

**बूचड़खानों में नहीं, कहीं रहम का काम।**
**कटे 'पारदर्शी' सुनो, पशुधन सुबहो-शाम॥**

-देहदानी ॐ 'पारदर्शी'

# तीव्रगति से माण्डवपुर तीर्थ निर्माण

उदयपुर (स. सं.)

राजस्थान की धर्मधरा अतिप्राचीन तीर्थ श्री माण्डवपुर में तीर्थ में चातुर्मासार्थ विराजित सूरिमन्त्राराधक, संघ एकता के शिल्पी आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा के मार्गदर्शन में चल रहे निर्माण कार्य ने तीव्र गति पकड़ ली है। एक ओर 52 जिनालय का कार्य द्रुत गति से चल रहा है तो दूसरी ओर अन्य प्रकल्प का भी निर्माण कार्य में गति आ गई है।

मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. ने जानकारी देते हुए बताया कि पुरानी भोजनशाला को गिराने का कार्य प्रारम्भ हो गया है तथा इस भोजनशाला के स्थान पर 200×200 का सभा हेतु पक्का चौक का निर्माण किया जायेगा। इसके साथ ही तीर्थ निर्माण में यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक धर्मशालाओं का निर्माण कार्य भी पूर्ण किया जायेगा।

पू. आचार्यदेवेशश्री की सूरिमन्त्राराधना पीठिका 6 सितम्बर 2018 को पूर्ण हो जायेगी। उसके पश्चात् उनके मार्गदर्शन से कई प्रकल्पों का निर्माण कार्य इस तीर्थ पर होगा।

तीर्थ परिसर में प्रतिदिन राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि प्रान्तों से गुरुभक्तों का आवागमन हो रहा है। इस वर्ष के चातुर्मास लाभार्थी श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल परिवार निवासी पादरू द्वारा अतिथियों की सुन्दर स्वामीभक्ति की जा रही है।

पुरानी भोजनशाला को गिराते श्रमिक अवलोकन करते मुनिश्री आनन्दविजयजी म.सा. तीर्थ ट्रस्टी काजूमलजी एवं प्रियदर्शी

## योगी-वाणी

रिश्ते चाहे कितने ही बुरे क्यों नहीं हो,
उन्हें तोड़ना मत क्योंकि
पानी चाहे कितना भी गन्दा हो
अगर प्यास नहीं बुझा सकता
परन्तु वो आग बुझा सकता है

-योगिराज गुरु श्री शान्तिविजयजी

**आत्मीय निवेदन**

समस्त श्रीसंघों के अध्यक्षों, साधु-साध्वी भगवन्तों से निवेदन है कि आप अपने यहाँ होने वाले कार्यक्रमों के समाचार आदि प्रकाशित सामग्री प्रत्येक मास की 10 व 20 तारीख तक 'यतीन्द्र वाणी' में प्रकाशनार्थ भिजावें।

-सम्पादक, यतीन्द्र वाणी,
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार,
साबरमती-गाँधीनगर हाइवे, पो.- मोटेरा-382 424


श्री राजेन्द्र-धनवन्द-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द-जयन्तसेन-शान्ति गुरुवरों के विचारों एवं कार्यों को समर्पित
सम्पूर्ण जैन समाज का ज्ञानवर्धक लोकप्रिय हिन्दी पाक्षिक पत्र

# यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादक
**पंकज बी. बालड़**

स. सम्पादक
**कुलदीप डोंगी 'प्रियदर्शी'**

प्रधान कार्यालय
**श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार**
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)

**सदस्य शुल्क**

| | |
|---|---|
| संरक्षक सं. | 11000/- रुपये |
| सदस्य सं. | 7100/- रुपये |
| आजीवन ग्राहक | 1000/- रुपये |
| एक प्रति | 5/- रुपये |

**विज्ञापन दर**

| | |
|---|---|
| प्रथम पूरे पृष्ठ के - | 5100/- रुपये |
| अन्य पूरे पृष्ठ के - | 2100/- रुपये |
| अन्तिम पूरे पृष्ठ के - | 3100/- रुपये |
| अन्दर के एक चौथाई के - | 801/- रुपये |

विशेष सूचना- प्रत्येक मास की 10 एवं 20 तारीख तक विज्ञापन एवं समाचार कार्यालय पर भेजना अनिवार्य है। चैक या ड्राफ्ट 'यतीन्द्र वाणी' के नाम से भेजें।

* लेखक के विचारों से संस्था और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। * सम्पादक, यतीन्द्र वाणी

प्रेषक :
**यतीन्द्र वाणी** (हिन्दी पाक्षिक)
C/o. श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)
दूरध्वनि : 079-23296124,
मो. 09426285604
e-mail : yatindravani222@gmail.com
www.shrirajendrashantivihar.com

'Reg. Under Postal Registration No. AHD-C/22/2018-2020 VALID UPTO 31st December-2020 issued by the SSPO's Ahmedabad City Division, permitted to post at Ahmedabad PSO on 1st & 15th every month'
RNI No. GUJ/HIN/1999/321
Licensed to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/070/2018-20 valid up to 31/12/2020


श्री.....
.....
.....

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक- शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, सम्पादक- पंकज बी. बालड़, यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक, श्री राजेन्द्र शान्ति विहार, पो.- मोटेरा-382 424 से प्रकाशित एवं सनसाईन फोटो प्रिन्ट, एफ-4, तुषार सेन्टर, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मुद्रित